पाश्चात्य दर्शन के अनुसार ज्ञान के दार्शनिक आधार
(Philosophical Basis of Knowledge accordcing to Western Philosophy)

(1) जीन जैक्स रूसो
(Jean Jacques Rousseau, 1712-1778)

"Everythging is good as it comes from the hands of the Author of Nature but everything degenerates in the hands of man."
—**Rousseau**

जीवन-वृत्त (Life-Sketch)

महान दार्शनिक, युग प्रवर्तक, शिक्षा मनीषी, उद्भट राजनीतिज्ञ, समाजशास्त्री, अर्थशास्त्री एवं अद्वितीय विचारक जीन जैक्स रूसो का जन्म इटली के जेनेवा नगर में 28 जून, 1712 ई० में एक गरीब घड़ीसाज पिता के घर एक निर्धन परिवार में हुआ। जन्म के कुछ समय बाद उनकी माता का देहान्त हो गया, इसलिये उनके लालन-पालन का सम्पूर्ण भार उसके पिता पर आ गया। पिता घड़ीसाजी का काम करता था और बच्चे की ओर कोई ध्यान नहीं देता था। बचपन से ही वह प्रकृति-सौन्दर्य का प्रशंसक था और उसका यह प्रकृति-प्रेम बराबर बढ़ता गया। अध्ययन और प्रकृति के अवलोकन से रूसो मनस्वी और भावुक बन गया। मार खाने के डर से वह स्कूल नहीं जाता था, किन्तु उसे पढ़ने का शौक था। 6 वर्ष की आयु में ही उसने साहित्य, धर्म और इतिहास-सम्बन्धी अनेक पुस्तकें पढ़ डालीं, जिनका उसके ऊपर गहरा प्रभाव पड़ा। विद्यालय का वातावरण उसके अनकूल न होने के कारण वह विद्यालय की शिक्षा को व्यर्थ मानता था। 10 वर्ष की अवस्था में रूसो को **'बोसी'** नाम की ग्राम पाठशाला में भर्ती कराया गया। इस प्रकार 11 वर्ष की आयु तक उसका जीवन इसी प्रकार अनिश्चित रूप से चलता रहा। इसके बाद उसे एक झूठे आरोप में कठोर दण्ड भुगतना पड़ा, जिससे उसके हृदय को बड़ी ठेस पहुँची। कारावास से छूटकर रूसो ने चार वर्ष तक एक शिल्पकार के पास काम सीखा, बाद में यह कार्य छोड़ दिया।

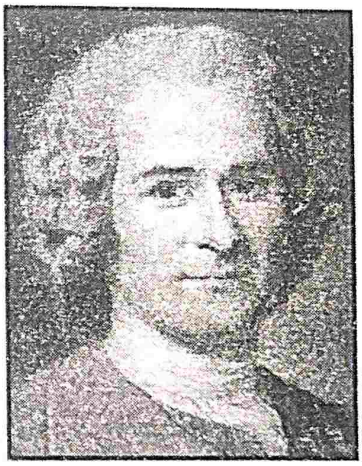

25 वर्ष की आयु में रूसो ने अध्ययन प्रारम्भ किया। साथ ही उसने लिखना शुरू किया। रूसो ने दु:खी और पीड़ित जनता के प्रति सहानुभूति दिखाई और अपने लेखों से मानव शोषण का जोरदार विरोध किया। समाज में फैली बुराइयों को देखकर उसे सामाजिक जीवन से घृणा होने लगी थी, यद्यपि वह स्वयं एक महान समाज सुधारक हुआ है।

रूसो की निषेधात्मक शिक्षा
(Rousseau's Negative Education)

रूसो विद्यालय शिक्षा के विरुद्ध था और निषेधात्मक शिक्षा को उपयुक्त मानता था। रूसो के अनुसार, "प्रचलित व्यवहार से बिल्कुल उल्टा करो और तुम सदैव ठीक करोगे।"

"Take the reverse of the accepted practice and you will almost always do right.

रूसो ने अपने शिक्षा-सिद्धान्तों के प्रतिपादन में एक ऐसी विचारधारा का सृजन किया है जिसे निषेधात्मक शिक्षा की संज्ञा दी गई है। यहाँ निषेधात्मक शिक्षा का तात्पर्य यह है कि सबसे पहले हमें 'गुण' और 'सत्य' के सिद्धान्त नहीं पढ़ाने चाहिएँ, वरन् हृदय की पाप से और मस्तिष्क की भ्रम से रक्षा करनी चाहिए।

शिक्षा के अन्तर्गत बालक के विविध अंगों, ज्ञानेन्द्रियों तथा विभिन्न शक्तियों को उपयोग में लाना चाहिए। इस प्रकार उसके मस्तिष्क को तब तक निष्क्रिय रखना चाहिए जब तक उसमें निर्णय-शक्ति का प्रादुर्भाव न हो

जाये। बाहरी दूषित प्रभावों से बालक को बचाने की चेष्टा करनी चाहिए तथा उसे पापों से बचाने के लिए गुण देने में शीघ्रता न करनी चाहिए, क्योंकि जब तक उसमें विवेक का विकास न होगा तब तक वह गुण को 'गुण' नहीं समझ पायेगा। इस प्रकार की सोच को रूसो लाभप्रद समझते हैं। वे कहते हैं कि यदि हम निर्दिष्ट स्थान की ओर बिना किसी हानि के बढ़ते जाते हैं तो उसे लाभ ही समझना चाहिए।

रूसो के अनुसार, "मैं निषेधात्मक शिक्षा उसे कहता हूँ जो समय के पहले ही मस्तिष्क को प्रौढ़ बनाना चाहती है और बालक को युवा पुरुषों के कर्त्तव्य में शिक्षा देती है। मैं निषेधात्मक शिक्षा उसे कहता हूँ जो ज्ञान देने के पूर्व ज्ञान के ग्रहण करने वाले अंगों को दृढ़ बनाने का प्रयत्न करती है और जो ज्ञान इन्द्रियों के समुचित उपयोग से 'विवेक-शक्ति' को बढ़ाती है। निषेधात्मक शिक्षा गुण नहीं देती, वह पाप से बचाती है।"

निषेधात्मक शिक्षा की प्रमुख विशेषताएँ
(Chief Characteristics of Negative Education)

निषेधात्मक शिक्षा की प्रमुख विशेषताएँ निम्न हैं–

(1) समय की बचत नहीं (No Time Savings)—रूसो के अनुसार, बचपन मे समय की बचत की जायेगी, इसके बजाय समय को बर्बाद किया जाये। बच्चे को दौड़ना, उछलना और दिन भर खेलने दें। वह जो कुछ भी करना चाहे उसे करने दें। उसे किसी प्रकार के नियंत्रण में बाँध कर रखना उचित नहीं। उसे स्वतंत्र रूप से क्रियाएँ करते रहने देना चाहिए।

(2) पुस्तकीय ज्ञान नहीं (No Bookish Knowledge)—**रूसो** कहता है, "मैं पुस्तकों से घृणा करता हूँ, क्योंकि वे बच्चों के लिये अभिशाप हैं। वे केवल हमें ऐसी बात करना सिखाती हैं, जिन्हें हम नहीं जानते। बच्चे को अपनी पुस्तकों का कीड़ा बनाने की बजाय मैं उसको कार्यशाला में व्यस्त रखता हूँ। उसके हाथ उसके मन के लाभ का कार्य करेंगे। रूसो ने यह अनुभव किया कि पुस्तकों में भली-भाँति तैयार पाठ्य-सामग्री नगण्य लाभ देती है। बच्चों को अपने प्रयासों तथा विभिन्न प्रकार के अनुभवों से सीखने दें।"

(3) आदत निर्माण नहीं (No Habit Formation)—उनके अपने शब्दों में, "बच्चे की जिस आदत का निर्माण होने दिया जाता है, वह किसी आदत के बन्धन में न पड़ने की आदत है।" अत: छोटे बच्चों को सुदृढ़ आदतों का दास नहीं बनाया जाये। उन्हें प्रत्येक प्रकार के कार्य करने के लिये स्वतन्त्र रखा जाये। यह समय अच्छी व बुरी आदतों के निर्माण का नहीं होता। इसका निर्णय भविष्य में करना उचित समझा जाता है।

(4) कोई सामाजिक शिक्षा नहीं (No Social Education)—रूसो के काल में समाज का उच्च वर्ग भ्रष्ट था। वह बच्चों को ऐसे समाज से अलग रखने और समाज की बुराइयों से अपने को बचाने के लिये, तर्क और ज्ञान की पूर्णता प्राप्त करने तक उन्हें प्रकृति के मध्य पढ़ाना चाहता था। रूसो कहता है–

सारी बुराइयाँ समाज में ही हैं, अत: बालक से समाज से दूर रखने में ही भलाई है।

(5) कोई नैतिक शिक्षा नहीं (No Moral Education)—रूसो नैतिक शिक्षा देने के पक्ष में नहीं है। बच्चे को अपने कार्यों के परिणामों से सही और गलत को समझने के लिये कार्य करने दो, वह कहता है कि, आपके निरन्तर उपदेश और नैतिक शिक्षा से अच्छाई की बजाय बुराई अधिक होती है। वह पुन: कहता है, "बच्चे को किसी तरह दण्डित न करो तथा कभी भी माफी माँगने के लिये न कहो, वह कुछ भी गलत नहीं कर सकता है।"

(6) औपचारिक अनुशासन नहीं (No Formal Discipline)—रूसो बच्चों के स्वतन्त्र और सार्थक अनुशासन का समर्थक था। बच्चों को अपने कार्यों के प्राकृतिक परिणामों को पाने दो। यदि बच्चा खिड़की का शीशा तोड़ता है तो उसको खिड़की के पास बैठाकर ठण्डी हवा के झोंके झेलने दो। यदि वह वृक्ष पर चढ़ता है तो उसको गिरने और फिर से पेड़ पर चढ़ने दो। इस प्रकार रूसो अनुशासन की दृष्टि से बालक पर कोई औपचारिक अनुशासन थोपने के पक्ष में नहीं है।

(7) शिक्षा के पारम्परिक तरीके के साथ लगाव नहीं (No Sticking to Traditional Method of Education)—रूसो देश में प्रचलित सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक और शैक्षणिक दशाओं से बहुत क्षुब्ध था। इसी कारण, उसने शिक्षा की परम्परागत कार्य-विधि को यह कहते हुए चुनौती दी कि, "मुझे पूर्णत: अज्ञानी बारह वर्ष का एक बच्चा दो। पन्द्रह वर्ष का होने पर मैं उसको तुम्हें बचपन से पढ़ाये गये बच्चे से अधिक ज्ञानवान बनाकर सौंपूँगा।" साथ ही, उसमें और बचपन से सिखाये गये बच्चे में यह अन्तर भी दिखाई देगा कि बचपन से पढ़ाया गया बच्चा चीजों को कंठस्थ करेगा, जबकि मेरे द्वारा सौंपा गया बच्चा सीखी गई बातों के व्यावहारिक उपयोग में सिद्धहस्त होगा।

शिक्षा के क्षेत्र में रूसो का योगदान
(Rousseau's Contribution in the Field of Education)

शिक्षा के क्षेत्र में रूसो के योगदान को निम्नवत् स्पष्ट किया गया है—

(1) बालक की सम्पूर्ण जानकारी (Know the Child)—रूसो के इस सिद्धान्त को बाद में **पेस्टालॉजी** (Pestalozzi) और **फ्रोबेल** (Froebel) ने व्यावहारिक रूप दिया और शिक्षा की प्रक्रिया में बच्चे के लिए प्रेम को आवश्यक समझा जाने लगा। रुसो ने ही पहली बार यह बल दिया कि बच्चे के आधार रूप में शिक्षा आरम्भ की जाये। इसको बच्चे की आवश्यकताओं, रुचियों, प्रवृत्तियों, रुझानों, संवेगों, अभिप्रेरणों और उसकी प्रकृतिगत आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाली होनी चाहिए।

(2) शिक्षा मनोविज्ञान का ज्ञाता (Master of Educational Psychology)—रूसो के समय से पहले शिक्षाविदों के मन में मनोविज्ञान की मजबूत पकड़ नहीं थी। रूसो ने शिक्षा को एक नया सिद्धान्त किया। व्यक्तिगत भिन्नताओं, विकास के मनोविज्ञान, कार्य करते हुए सीखना, बच्चे की मूल रुचियों और प्रवृत्तियों का ध्यान, अभिप्रेरण, खेल-खेल में और कार्य करते हुए शिक्षा देने के सिद्धान्त को महत्त्व देकर शिक्षा में उसने मनोवैज्ञानिक आन्दोलन का सूत्रपात किया। उसके प्रभाव में ही शिक्षा बाल-केन्द्रित हो पाई।

(3) नवीन शिक्षा प्रणाली (New Methods of Teaching)—रूसो के समय से पहले एक वयस्क की तरह ही बच्चे को पढ़ाया जाता था। **रूसो** ने इस कार्यविधि का विरोध किया और उद्घोषणा की कि—"मनुष्य बनने तक बच्चों को बच्चा ही रहने दें।"

वस्तुत: उसका महानतम् योगदान शिक्षण विधियों के क्षेत्र में रहा। पुरानी परम्पराओं के स्थान पर उसने अभिप्रेरण, समस्याओं को उत्पन्न करने और बच्चे की प्रत्यक्ष अनुभूति और कार्यों का उपयोग करने के महत्त्व को दर्शाते हुए खेल के ढंग और कार्य करते हुए सीखने की विधि सुझाई। उसने यह कहकर समस्या हल करने की आधुनिक विधि सुझाई—"बच्चे के आगे समस्या रखिये और उसको स्वयं हल करने दीजिये।"

(4) प्रत्यक्ष वस्तुओं पर बल दिया (Emphasis on Concrete Objects)—रूसो के अनुसार शिक्षा का अर्थ मौखिक जानकारी को छात्रों में भरना नहीं है। शिक्षा स्मरणशक्ति की बजाय तर्क और ज्ञान से आती है। यह तर्क और ज्ञान मनुष्यों के प्रथम अनुभवों, प्रकृति और चीजों पर आधारित है। उन्होंने कहा कि जिस विषय को सीधे अनुभव से नहीं पढ़ाया जा सकता, उसको पाठ्यक्रम में सम्मिलित नहीं किया जाये। उन्होंने अमूर्त चिह्नों और प्रतीकों की बजाय बच्चे को प्रत्यक्ष चीजों के माध्यम से शिक्षा देने की वकालत करते हुए कहा कि—"सामान्य रूप में स्वयं चीज का प्रतीक स्थानापन्न न लें, केवल चीज को मूल रूप में दर्शाना असम्भव होने की दशा में प्रतीक का सहारा लें।"

(5) स्वतन्त्र और सार्थक अनुशासन (Free and Positive Discipline)—वह बच्चे पर किन्हीं चारित्रिक नियमों को लागू करने के विरुद्ध था। इसके बजाय उसने बच्चों को कार्य करने की अधिकतम स्वतन्त्रता देने तथा उनके कार्यों में हस्तक्षेप न करने की सिफारिश की थी। स्कूलों में स्वतन्त्र और सार्थक अनुशासन का आधुनिक विचार रूसो से ही उत्पन्न हुआ। उसने कहा कि-"बच्चे को प्रकृति में स्वतन्त्रता से

विचरण करने दीजिये तथा उसे अपने वैयक्तिक अनुभवों तथा दैनिक जीवन के क्रियाकलापों में वास्तविक प्रतिभागिता के माध्यम से सीखने दीजिये।''

"Let the child move freely in the nature and learn from his own personal experience and through actual participation in day-by-day life activities."

(6) सामाजिक बल शिक्षा पर (Emphasis on Social Education)—रूसो ने आधुनिक शिक्षा में सामाजिक प्रवृत्ति की बुनियाद डाली। अध्ययन की योजना में हस्तकलाओं, उद्यम-प्रधान शिक्षा, भौतिक क्रियाकलाप को सम्मिलित करना तथा नैतिक और भावनात्मक विकास तथा प्रत्यक्ष अनुभूति पर बल देना इस तथ्य का प्रमाण है कि रूसो ने शिक्षा को सामाजिक आधार देने की दृष्टि से इसकी परम्परागत व्यवस्था को नवीन स्वरूप प्रदान करने का भरसक प्रयास किया था। उसने बालकों में जन्म से ही सामाजिक गुणों को अंकुरित करने पर बल दिया। रूसो ने **'एमील'** में सामाजिक विकास पर अवश्य बल दिया, जबकि सामाजिक परिवेश की शिक्षा की अवहेलना की। उसने बालक में सहयोग, सद्भावना, सहानुभूति, सहकारिता आदि गुणों के विकास पर बल दिया।

(7) वैज्ञानिक शिक्षा पर बल (Emphasis on Scientific Education)—रूसो ने बालकों में स्वत: ज्ञान प्रकृति द्वारा प्राप्त करने की जिज्ञासा उत्पन्न करके पेड़-पौधों, वनस्पतियों तथा जीव-जन्तुओं के सम्बन्ध में ज्ञान प्रदान करने पर बल दिया जिससे उनमें वैज्ञानिक उत्सुकता पनप सके। साथ ही, वैज्ञानिक शिक्षा को अनुभव एवं निरीक्षण करने पर आधारित माना। इस प्रकार रूसो ने परम्परागत शिक्षा के साथ-साथ विज्ञान की शिक्षा पर भी पर्याप्त बल दिया है ताकि हम प्रगति की राह पर ठीक से अग्रसर हो सकें।

(8) स्व-अधिगम पर बल (Emphasis on Self-learning)—रूसो ने 'एमिल' में पुस्तकों द्वारा न सीखकर स्वानुभव द्वारा सीखने पर बल दिया, क्योंकि बालक अपने अनुभव द्वारा ज्यादा सीखता है। वह यह न जाने कि पुस्तकीय ज्ञान क्या होता है बल्कि यह जाने कि उसे किस प्रकार का ज्ञान प्राप्त करना है, उसी से सम्बन्धित अनुभव प्राप्त होने पर सही ज्ञान प्राप्त किया जा सकेगा। रूसो पुस्तकीय ज्ञान का घोर विरोधी समझा जाता है तथा प्रकृति के प्रांगण में बैठकर स्व-अध्ययन को विशेष महत्त्व देता है।

(9) सकारात्मक शिक्षा की अपेक्षा नकारात्मक शिक्षा पर बल (Emphasis on Negative Education rather than Positive Education)—रूसो ने सकारात्मक शिक्षा की अवहेलना की, जबकि नकारात्मक शिक्षा पर बल दिया। रूसो ने प्रचलित शिक्षा को जीवन में बन्धन के रूप में देखा, जबकि बालक की स्वाभाविक शक्तियों के विकास पर बल दिया, जिससे वह आनन्द ले सके। रूसो के अनुसार सकारात्मक शिक्षा वह है जो समय से पहले ही मस्तिष्क को बनाना चाहती है तथा बालक ऐसे कार्य करे जो प्रौढ़ द्वारा किये जाते हैं। इसलिये मैं बन्धनमुक्त शिक्षा देने की वकालत करता हूँ जो बालक को स्वतन्त्र आचरण करने पर बल दे, जिसके द्वारा यह स्वयं अपना विकास कर सके।

(10) नैतिक शिक्षा पर बल (Emphasis on Moral Education)—नैतिक शिक्षा से तात्पर्य बालक द्वारा अपनी स्वतन्त्र एवं स्वाभाविक क्रियाओं द्वारा नैतिक ज्ञान प्राप्त करने से है। ऐसा ज्ञान स्थायी होता है। बालक में स्थायी नैतिकता उसके स्वाभाविक गुणों पर निर्भर करती है। यही उसके जीवन को प्रभावित करती है। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि रूसो ने नैतिक शिक्षा पर भले ही बल दिया हो लेकिन इस प्रकार की शिक्षा प्रदान करने में भी वह किन्हीं बाहरी हस्तक्षेपों को स्वीकार नहीं करता तथा बालक की स्वयं की सोच को अधिक महत्त्व देता है।

(11) स्त्री शिक्षा पर बल (Emphasis on Women Education)—रूसो स्त्रियों की नैतिक एवं धार्मिक शिक्षा के पक्षधर थे, सामान्य शिक्षा के नहीं। उनके अनुसार स्त्री को माता एवं पत्नी के रूप में अपने पति की आज्ञा का पालन करना चाहिए। अत: स्पष्ट है कि रूसो का दृष्टिकोण स्त्रियों के प्रति अत्यनत संकुचित, रूढ़िवादी, असामाजिक तथा अव्यावहारिक था। इस प्रकार कहा जा सकता है कि स्त्रियों की शिक्षा के सम्बन्ध

में रूसो की विचारधारा अत्यन्त सीमित थी तथा एकांगी थी। इस सम्बन्ध में उसे उदारवादी नहीं कहा जा सकता तथा यही कारण है उसे आलोचनाओं का भी शिकार होना पड़ता।

शिक्षा के क्षेत्र में रूसो के योगदान के सम्बन्ध में **मुनरो** (Munro) ने यह उल्लेखनीय टिप्पणी की थी, "वह अनुसरणकर्त्ताओं का अग्रणी था, सामान्य यात्रा के विस्तृत राजमार्ग बनने तक उसने निर्जन वन में मार्ग दिखाया था।"

"He was the forerunner of so many who have followed in the trails. He blanzed through the forest until now they have become the broad highway of common travel."

संक्षेप में, शिक्षा के क्षेत्र में रूसो के योगदान को निम्नलिखित बिन्दुओं के माध्यम से स्पष्ट किया जा सकता है—

(1) शैक्षिक संस्थानों में बच्चे को महत्त्व दिया जाने लगा।

(2) प्राकृतिक विज्ञानों में प्रयोग (Experimentation) को बल दिया जाने लगा।

(3) पेड़-पौधों एवं जन्तुओं के अध्ययन को पाठ्यक्रम में स्थान दिया जाने लगा।

(4) फ्रैंच क्रान्ति को रूसो के विचारों का ही परिणाम माना जा सकता है।

(5) डीवी ने रूसो के इस सिद्धान्त को स्वीकार किया कि शिक्षा जीवन की तैयारी नहीं है बल्कि स्वयं अपने आप में ही जीवन है।

(6) पेस्टालॉजी ने रूसो के इस विचार को स्वीकार किया कि बच्चे को शिक्षा उसकी प्राकृतिक क्षमताओं के पूरी तरह से परिपक्व होने के बाद ही दी जाये।

(7) पेस्टालॉजी व फ्रोबेल दोनों ही रूसो के इस विचार से सहमत हैं कि मात्र शारीरिक श्रम ही एक व्यक्ति को स्वस्थ रख सकता है।

(8) इस स्तर पर बच्चों को धर्म की शिक्षा नहीं दी जानी चाहिए क्योंकि वे इस स्तर पर उसे ठीक से नहीं समझ सकते।

(9) हरबर्ट स्पेन्सर रूसो के इस विचार से सहमत हैं कि बच्चे को प्राकृतिक तरीके से पढ़ाया जाना चाहिए।

(10) डीवी का दर्शन इस सिद्धान्त पर आधारित है कि बालक स्वयं को क्रियाओं के माध्यम से ही व्यक्त करता है।

(11) कभी आधुनिक दार्शनिक इस विचार से सहमत हैं कि बच्चे की रुचि उसकी आयु से अनुसार परिवर्तित होती रहती है।

(12) पेस्टालाजी और स्पेन्सर इस सिद्धान्त में विश्वास करते हैं कि शिक्षा का उद्देश्य बालक के विभिन्न अंगों को शक्ति प्रदान करना है।

(13) डीवी इस सिद्धान्त को स्वीकार करता है यदि बालक में तार्किक शक्ति है तो उसकी इस शक्ति का प्रयोग शोध कार्यों तथा दैनिक जीवन से सम्बन्धित समस्याओं को हल करने में किया जाना चाहिए।

(2) पाउले फ्रेरी (1921-1997)
(Paulo Freire 1921-1997)

"No one is born fully-formed, it is through self experience in the world that we become what we are." —**Paulo Freire**

"पाउले रेगलस जीन्स फ्रेरी ब्राजील का एक महान शिक्षाशास्त्री और दार्शनिक था। वह आलोच्य शिक्षणशास्त्र का प्रबल प्रवक्ता था।"